

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, किंग्स, सत्र 15, भाग 2, 1 राजा 19-20, भाग 2

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

अब हम अध्याय 20 की ओर मुड़ते हैं। यह अध्याय मुझे बहुत दिलचस्प लगता है क्योंकि, कई मायनों में, यह अप्रत्याशित है। हमने अहाब और इज़ेबेल पर परमेश्वर के न्याय को देखा है।

हमने स्पष्ट कथन देखे हैं। अहाब ने अपने से पहले किसी भी राजा से ज़्यादा बुरे काम किए। और फिर भी इस अध्याय में, हम दो अलग-अलग मौकों पर परमेश्वर को पूरी तरह से, बिना किसी कारण के, अप्रत्याशित रूप से सीरिया में अहाब को उसके दुश्मनों से बचाते हुए देखते हैं।

अगर हम नक्शे पर फिर से नज़र डालें, तो आप देखेंगे कि सबसे ऊपर अराम लिखा है और उसके नीचे कोष्ठक में सीरिया लिखा है। अराम इस क्षेत्र का पुराना नाम है। सीरिया इसका आधुनिक नाम है।

राजधानी, फिर से, नक्शे के शीर्ष पर, दमिश्क है। सीरिया, कई मायनों में, इजरायल का स्वाभाविक दुश्मन था क्योंकि महान राजमार्ग यूफ्रेट्स नदी से दमिश्क के माध्यम से, गैलिली सागर के उत्तरी किनारे के साथ, मेगिडो तक और मिस्र तक जाता था। इसलिए अगर सीरिया इजरायल को नियंत्रित कर सकता है, तो उनके नियंत्रण में अंतरराष्ट्रीय राजमार्ग का एक बड़ा हिस्सा होगा।

इसके अलावा, दूसरा मुख्य राजमार्ग अकाबा की खाड़ी से रेगिस्तान के किनारे से दमिश्क तक आता था। याद रखें, इसराइल ने रूबेन और गाद और मनश्शे के आधे गोत्र को इस क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया था। तो फिर, वे सड़क के उस हिस्से को नियंत्रित करते हैं।

फिर से, सीरिया इस पर विवाद कर रहा है। सीरिया इस पूरे ट्रांसजॉर्डन पठार पर नियंत्रण करना चाहता है, और यहीं पर संघर्ष होता है।

जब हम अध्याय की शुरुआत करते हैं, तो हम देखते हैं कि सीरिया का राजा आता है, और वह अहाब को बताता है, तुम्हारा सारा सोना-चाँदी मेरा है, और तुम्हारी सबसे अच्छी पत्नियाँ और बच्चे भी मेरे हैं। और अहाब इस बात पर कोई आपत्ति नहीं करता। मुझे संदेह है, जैसा कि हमने पिछली बार बात की थी, कि तीन साल के अकाल ने वास्तव में इस्राएल को घुटनों के बल पर ला दिया था।

और सीरिया इसका फ़ायदा उठा रहा है। और शारीरिक, भौतिक, सैन्य रूप से, अहाब इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता। और इसलिए, वह बस जवाब देता है, जैसा कि आप कहते हैं, मेरे प्रभु, राजा, मैं और मेरे पास जो कुछ भी है वह आपका है।

अब, हम उस बात पर ध्यान देते हैं जो अहाब नहीं करता। वह परमेश्वर के पास नहीं जाता। वह परमेश्वर से सुरक्षा के लिए नहीं कहता।

वह भगवान से नहीं पूछता कि उसे क्या करना चाहिए। वह बस उस श्रेष्ठ शक्ति के सामने झुक जाता है जो उसके सामने है। मैंने अपने जीवन में जो कुछ सीखने की कोशिश की है और मुझे यह कहते हुए शर्म आती है कि मैं इसे अभी तक अच्छी तरह से नहीं सीख पाया हूँ, उनमें से एक यह है कि संकट में, सबसे पहले जो करना चाहिए वह है भगवान से पूछना, आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं? मुझे क्या करना चाहिए? आपकी इच्छा क्या है? आपकी योजना क्या है? संकट के क्षण में हम कितनी आसानी से बस इतना कह देते हैं, ठीक है, ऐसा लगता है कि मुझे शायद यह करना चाहिए।

नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। ठीक है, मैं यह करूँगा। ओह, वैसे, भगवान, क्या आप कृपया मेरे द्वारा चुने गए काम को आशीर्वाद देंगे? लेकिन अहाब ऐसा भी नहीं करता।

खैर, उसकी सुस्त प्रतिक्रिया सीरिया के राजा बेन-हदद को प्रोत्साहित करती प्रतीत होती है। और वह कहता है, ओह, ठीक है। मैं न केवल तुम्हारा सोना-चाँदी और तुम्हारी पत्नियों और बच्चों में से सबसे अच्छी चीजें लेने जा रहा हूँ, बल्कि मैं अपने लोगों को तुम्हारे राज्य में भेजूँगा ताकि वे तुम्हारी पसंद की सारी चीजें चुनकर ले जाएँ।

और राजा ने इस बार अपने सलाहकारों को बुलाया। और उन्होंने कहा, ऐसा मत करो। और बेन-हदद अपने देवताओं के नाम पर शपथ लेता है और कहता है, कल, कल, सामरिया की इतनी धूल नहीं बचेगी कि मेरे प्रत्येक आदमी के पास मुट्ठी भर भी हो।

और मुझे अहाब का जवाब पसंद आया। वह श्लोक 11 में कहता है कि जो व्यक्ति अपने कवच को पहनता है, उसे उस व्यक्ति की तरह घमंड नहीं करना चाहिए जो इसे उतार रहा है। जो आप करने जा रहे हैं, उसे पहले से मत कहो, इससे पहले कि आप कुछ करें।

लेकिन देखिए क्या होता है। एक भविष्यवक्ता। अब, मुझे उम्मीद है कि पिछली बार जो मैंने कहा था, उससे याद रखें कि इस पूरी कहानी में एलिजा, एलीशा को परमेश्वर का आदमी कहा गया है।

तो, इसे भविष्यवक्ता कहा जाता है। अब, संभवतः यह एलिय्याह है। लेकिन मुझे संदेह है कि ऐसा नहीं है।

एक नबी इस्राएल के राजा अहाब के पास आया और उसने घोषणा की, "यहोवा यह कहता है। क्या तुम इस विशाल सेना को देख रहे हो? मैं आज इसे तुम्हारे हाथ में दे दूँगा। एक मिनट रुको।

एक मिनट रुकिए। अहाब इसके लायक नहीं है। अहाब ने यह अधिकार अर्जित नहीं किया है कि परमेश्वर उसके पक्ष में कोई कार्यवाही करे।

लेकिन भगवान ऐसा नहीं करते। ओह, हमारे जीवन में कितनी बार भगवान ने कोई कदम उठाया है, एक ऐसा कदम जो हमारे लिए उचित नहीं था, एक ऐसा कदम जो केवल उनकी कृपा की अभिव्यक्ति है? कृतज्ञता हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा होनी चाहिए। हम कितनी आसानी से उन

त्रासदियों को देखते हैं जो हमारे साथ हुई हैं, कठिनाइयाँ, समस्याएँ, और हम कहते हैं, भगवान, मैं इसके लायक नहीं था।

आपने ऐसा क्यों किया? कितनी बार भगवान ने हमें त्रासदी से बचाया है? कितनी बार उसने हमें मुश्किलों से बचाया है? कितनी बार उसने हमारे जीवन में अच्छे और दयालु काम किए हैं जिनके बारे में हमें पता भी नहीं था? वह ऐसा क्यों कर रहा है? वहाँ कथन को देखें, श्लोक 13. तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। हाँ, जब आग वेदी पर गिरती है और उसे जला देती है, तो यह सबूत है, लेकिन शायद इससे भी मजबूत सबूत, और मैं इसमें से शायद निकाल दूँगा, मजबूत सबूत हमारे प्रति उसकी कृपा है, बिना किसी योग्यता के, खुशी से दिया गया।

तब तुम जान जाओगे। मैंने तुम्हें एक मौका दिया है, अहाब, यह जानने का कि मैं ईश्वर हूँ। मैंने दिखा दिया है कि बाल कुछ भी नहीं है, और मैं ही सब कुछ हूँ।

अब मैं तुम्हें एक और मौका देने जा रहा हूँ, अहाब, जब मैं तुम्हें कृपापूर्वक छुड़ाऊँगा तो तुम जान सकोगे कि मैं यहोवा हूँ। तो, यह कौन करने जा रहा है, अहाब ने कहा? और परमेश्वर ने कहा, युवा लोगों को यह करने दो। लेफ्टिनेंटों को यह करने दो।

अब याद रखें, बेन-हदाद के पास 32 राजा हैं जो उसकी सेवा कर रहे हैं। यह परमेश्वर की बहुत खासियत है। लेफ्टिनेंट, सार्जेंट, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं।

जनरलों को इस बहुत ही जोखिम भरे हमले का नेतृत्व करना चाहिए। जब हम सैन्य रूप से काफी हद तक असहाय होते हैं, नहीं, यह भगवान की तरह है। जैसा कि पॉल हमसे कहता है, भगवान की कमजोरी मनुष्यों की ताकत से अधिक मजबूत है।

तब तुम जानोगे कि मैं ही प्रभु हूँ। और इसलिए, बेशक, ठीक यही हुआ। अहाब ने 232, जैसा कि NIV में बताया गया है, प्रांतीय कमांडरों के अधीन जूनियर अधिकारियों और लेफ्टिनेंटों को बुलाया।

उसने बाकी इस्राएलियों को इकट्ठा किया, जिनकी कुल संख्या 7,000 थी। खैर, जब आप बाइबल में आमतौर पर इस्तेमाल की जाने वाली कुल संख्या को देखते हैं, तो आप जानते हैं कि यह एक छोटा समूह है। और वे दोपहर के समय निकल पड़े, जबकि बेन-हदाद और उसके साथ गठबंधन करने वाले 32 राजा अपने तंबुओं में शराब पी रहे थे।

झूठे आत्मविश्वास के लिए इतना कुछ, यह सुबह में नहीं था, जब आपको उठाने के लिए थोड़ा पीना था। यह रात में नहीं था।

यह दिन के मध्य में है। और फिर, जैसा कि मैंने आपसे कई बार कहा है, आपको बस बाइबल से प्यार करना है। यह एक बहुत ही अद्भुत, अद्भुत कथा है।

श्लोक 17, बेन-हदाद ने गुप्तचरों को भेजा था। और उन्होंने बताया कि सामरिया से लोग आगे बढ़ रहे हैं। और उसने कहा, अगर वे शांति के लिए बाहर आए हैं, तो उन्हें जीवित पकड़ लो।

अगर वे युद्ध के लिए निकले हैं, तो उन्हें ज़िंदा पकड़ लो। कोई समस्या नहीं। सब कुछ ठीक है।

प्रांतीय कमांडरों के अधीन कनिष्ठ अधिकारी सेना के साथ शहर से बाहर निकल गए। हर एक ने अपने प्रतिद्वंद्वी को मार गिराया। और इस पर, अरामी इस्राएलियों के साथ भाग गए।

बेन-हदद अपने कुछ घुड़सवारों के साथ घोड़े पर सवार होकर भाग निकला। इस्राएल का राजा आगे बढ़ा और घोड़ों और रथों पर काबू पा लिया और अरामियों को भारी नुकसान पहुँचाया। हाँ, यह परमेश्वर है।

अप्रत्याशित का उपयोग करते हुए, सबसे कमज़ोर, सबसे असहाय प्रतीत होने वाले का उपयोग करते हुए, परमेश्वर ने कृपापूर्वक अहाब को यह महान विजय प्रदान की। यह परमेश्वर है। परमेश्वर जो इस्राएल की तीन निःसंतान माताओं से एक राष्ट्र का निर्माण करता है।

क्या आपने इस पर गौर किया है? इस्राएल की पहली तीन माताएँ, मानवीय रूप से कहें तो, निःसंतान हैं। तो यह कोई संयोग नहीं है कि, एक बार फिर, परमेश्वर का पुत्र एक ऐसी स्त्री से पैदा हुआ जिसने कभी सेक्स नहीं किया। और उसके पूर्ववर्ती, उसके दूत, एक बूढ़ी स्त्री से पैदा हुए जो प्रजनन आयु से बहुत दूर थी।

यही परमेश्वर है। यही परमेश्वर है। यह परमेश्वर है जो ज्येष्ठ पुत्रों, प्रतिभाशाली, बलवान, शक्तिशाली लोगों का उपयोग नहीं करता, बल्कि दूसरे जन्मे पुत्रों का उपयोग करता है।

परमेश्वर ने याकूब को क्यों चुना? क्योंकि वह दूसरे नंबर पर था। क्योंकि वह वही है जिसके बारे में दुनिया कहती है कि वह अनिवार्य रूप से बेकार है। वह हमारा परमेश्वर है।

यीशु ने अपने चुने हुए लोगों को क्यों चुना? मछुआरे, क्रांतिकारी, कर संग्रहकर्ता। उसने आपको और मुझे क्यों चुना? इसलिए नहीं कि हम इतने प्रतिभाशाली हैं। इसलिए नहीं कि हम इतने सक्षम हैं।

इसलिए नहीं कि दुनिया को हममें ऐसी अद्भुत संभावनाएँ दिखती हैं। मैं कह सकता हूँ कि वह धरती की गंदगी को चुनता है ताकि वह दिखा सके कि वह कौन है और क्या कर सकता है। और अब आप जान जाएँगे।

तो, अहाब की प्रतिक्रिया क्या थी? शून्य। क्या वह अपने घुटनों पर गिर गया और अपनी मूर्तिपूजा से पश्चाताप किया? नहीं। क्या उसने इस महान जीत के लिए यहोवा को धन्यवाद का एक शब्द भी कहा? नहीं।

नहीं। और दोस्तों, मैं कहना चाहता हूँ कि हमारे लिए ऐसा करना बहुत आसान है। मूसा ने जो किया, वही करना, परमेश्वर की शक्ति का श्रेय लेना।

भगवान ने हमारे जीवन में कुछ अच्छा किया है। भगवान ने कुछ महान काम किए हैं, हमें कुछ महान उपहार दिए हैं। और हम कहते हैं, ठीक है, आपको बस अपना सर्वश्रेष्ठ करना है।

मुझे विश्वास नहीं था कि वे लेफ्टिनेंट वास्तव में हमें इस तरह की लड़ाई में ले जा सकते हैं। लेकिन आप जानते हैं क्या? यह स्पष्ट रूप से मेरे द्वारा लिया गया एक बुद्धिमान निर्णय था। भविष्यवक्ता श्लोक 22 में कहता है, फिर से, भविष्यवक्ता इस्राएल के राजा के पास आया और कहा, अपनी स्थिति मजबूत करो, देखो कि क्या करना है क्योंकि अगले वसंत में, अराम का राजा फिर से तुम पर हमला करेगा।

यह खत्म नहीं हुआ है। यह खत्म नहीं हुआ है। आपको लगता है कि आपने एक बड़ी जीत हासिल कर ली है, लेकिन वास्तव में, यह तो बस शुरुआत थी।